स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence), प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence), आध्यात्मिक बुद्धि (Spiritual Intelligence) तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों (Social and Cultural Values) पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम (Compulsory Core Curriculum) के प्रभाव का अध्ययन

शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु शोध-प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकत्री

पुनीता

शोध निर्देशिका

प्रो. सविता श्रीवास्तव

फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन विभाग, शिक्षा संकाय

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा - 282005

2023

1.0.0 प्रस्तावना

परिवर्तन के इस दौर में मानव जीवन एक संघर्षमयी जीवन बन गया है। आज के समय में जहां हर दिन समाज तथा परिवेश में निरंतर परिवर्तन हो रहा है, वहीं शिक्षा ही एकमात्र ऐसी कुंजी है, जो मानव के इस संघर्षमयी जीवन को प्रगति पथ पर ले जाकर भाग्योदय कर सकती है। शिक्षा का तात्पर्य वास्तव में समाज में अनुकूल परिवर्तन लाना है। शिक्षा बालक की बुराइयों को दूर कर उसके आंतरिक गुणों को उजागर करती है, जिसके प्रकाश में बालक अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुंचाता है।

शिक्षा

मानव जीवन की सीढ़ी है, हाँ शिक्षा बहुत जरूरी है।
तर जाती हर पीढ़ी है, ये शिक्षा बहुत जरूरी है
जीवन राह आसान बनाती, पग-पग पर यह सीख सिखाती
है अंधकार जीवन में तो अखंड अलौकिक ज्योति है ,हां शिक्षा बहुत जरूरी है।
इसमें समाया मानव जीवन, भावनात्मकता हो या प्रतिकूलता ,आध्यात्म हो या सामाजिकता ,
जीवन के पाठ्यक्रम को कर देती यह पूरी है ‘ हाँ शिक्षा बहुत जरूरी है।
समूचे शरीर को शुद्ध बनाती,चरित्र ,बुद्धि हो या नैतिकता
इसीलिए तो मैं कहती हूं ग्रहण करें हर मानव शिक्षा।
सुने मन को भर देती है , पत्थर को सोना कर देती है
जीवन के इस अमिट चक्र की ये ही तो बस धुरी है, हाँ शिक्षा बहुत जरूरी है।

(स्वरचित शोधार्थी)

शिक्षा बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है । यह परिष्कार बालक और समाज दोनों के लिए ही उपयोगी होता है। शिक्षा जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ मानवता के गुण, तथा नैतिक मूल्यों से भी अवगत कराती है यूं तो हर व्यक्ति अपने अनुसार ही काम करता है किन्तु शिक्षा उन कामों को एक नया आधार प्रदान करती है ।

यूनेस्को, 1972 “प्रत्येक व्यक्ति के विकास मे शिक्षा का योगदान होता है वह विकास मन, शरीर, बुद्धि संवेदना, मूल्य और आध्यात्मिकता, से जुड़ा हुआ होता है”

नई शिक्षा नीति 2020 के आनुसार एक अच्छा शिक्षण संस्थान वह होता है जिसमे हर छात्र का स्वागत और देखभाल की जाती है । जहां एक सुरक्षित और सीखने का माहौल तथा अनुभवों को प्रदान किया जाता है और जहां सीखने के

लिए अनुकूल भौतिक आधारभूत संरचना और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध होंते हैं ।

प्रोफेसर ड्रेवर (n.d,) के अनुसार शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसमें तथा जिसके द्वारा बालक के ज्ञान चरित्र तथा व्यवहार को एक विशेष सांचे में डाला जाता है।

आधुनिक समय में शिक्षा का तात्पर्य कोई उपदेश देना ही नहीं माना जाता और न ही काल्पनिक सुदूर भविष्य को ध्यान में रखकर बालक को शिक्षा दी जाती है। आज शिक्षा का उद्देश्य वास्तव में बालक के वर्तमान का निर्माण करना तथा बालक के भावी-जीवन में प्रत्येक अवस्था में पथ प्रदर्शन और सहयोग करना है। अगर हम समाज पक्ष को ध्यान में रखकर कहें तो शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया की एक स्थिति है जिसका उद्देश्य समाज में सदस्यों को आजीवन अपने वर्ग में रहने योग्य बनाना है । आज शिक्षा का अर्थ कठिन परिश्रम करना नहीं है अपितु शिक्षा ग्रहण करना एक आनंदमयी अनुभव है, बालक नई-नई वस्तुओं को सीखने में आनंदनुभाव करता है वही वास्तव में शिक्षा है ।

शिक्षा की प्रक्रिया मे परंपरागत शिक्षण मे बालक एक निष्क्रिय श्रोता के रूप मे जाना जाता था वह शिक्षा प्रणाली निष्क्रिय थी किन्तु वर्तमान समय में बालक एक निष्क्रिय न श्रोता न होकर एक सक्रिय विद्यार्थी बन गया है । आज के समय मे बालक को बहुत सी चीजें खुद कर के सीखने में विश्वास है । अध्यापक एक सहयोगकर्ता या पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वहन करता है वह पहले की भांति नियम बताने वाली कोई मशीन नहीं होता। अध्यापक का व्यवहार बालकों के प्रति रुक्ष न होकर मित्र की तरह मृदुल और सहानुभूति पूर्ण होता है। अध्यापक का कर्तव्य बालक के सामने ऐसी समस्याओं को प्रस्तुत करना होता है, जिनको हल करने में बालक सक्रिय बनें। बालक के जीवन के हर स्तर पर उसकी शिक्षा का अलग महत्व होता है, चाहे प्राथमिक स्तर, माध्यमिक या उच्च शिक्षा स्तर हो बालक को प्रत्येक स्तर पर अलग-अलग क्षेत्रों मे ज्ञान मिलता है । रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार 'उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल जानकारी नहीं देती बल्कि हमारे जीवन को उसके पूरे अस्तित्व के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद करती है एवं इसका अंतिम लक्ष्य उन लोगों की स्थितियों में सुधार करना है जो हाशिए पर हैं।'

एतिहासिक प्रष्ठभूमि -

उच्च शिक्षा में सुधार के लिए सर्वप्रथम स्वतंत्रता के पश्चात उच्च शिक्षा आयोग या विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) का निर्माण किया गया। जिसे डॉक्टर राधाकृष्णन आयोग भी कहा जाता हैं। आयोग ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुझाव दिए हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में एकरूपता लाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना के लिए कहा गया । विश्वविद्यालयों की संख्या बडाई जाने व योग्य प्राध्यापकों की नियुक्ति पर जोर दिया।

विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम उपयोगी बनाया जाए तथा योग्य अध्यापकों की नियुक्ति की जाए। इस आयोग ने महाविद्यालयों में छात्रवृत्ति तथा महिलाओं के लिए आर्थिक सहायता का प्रावधान भी दिया। ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और मानसिक रूप से प्रबुद्ध हो । ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो राजनीतिक, सामाजिक, व्यवसायिक, उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में नेतृत्व कर सके। ऐसे जो सदैव प्रजातंत्र की भावना बनाए रखें तथा प्रबुद्ध भविष्य के लिए प्रयास करते रहे। नव युवकों का निर्माण करना जो सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करें तथा देश की भावी निर्माण में सहयोग प्रदान करें।स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करना। छात्रों में प्रयास मूल्य समानता स्वतंत्रता और न्याय का संरक्षण एवं संवर्धन सिखाना राष्ट्रीय अनुशासन की भावना का विकास करना हो। छात्रों में विश्वबंधुत्व एवं सद्भावना का विकास करना । छात्रों का आध्यात्मिक विकास करना हो । ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो दूरदर्शी बुद्धिमान और बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ हो तथा समाज सुधार में सहयोग करें । ऐसे नागरिकों का निर्माण करना जो प्रजातांत्रिक भावना के साथ सजग देश के भविष्य निर्माण में सहयोग करें।

आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम स्नातक स्तर पर सभी वर्गो कला, विज्ञान, व्यवसायिक पाठ्यक्रम विस्तृत किए जाएं उनमें छात्रों को अपनी रुचि व आवश्यकता अनुसार विषय का चयन करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जाए। स्नातक स्तर पर सभी वर्गों कलाविज्ञान व्यवसाय में समान शिक्षा और धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य पाठ्यक्रम में रखा जाए।स्नातक स्तर पर अंग्रेजी व हिंदी भाषा अनिवार्य हो। सामान्य एवं विशेष शिक्षा का समन्वय किया जाए। व्यवसायिक पाठ्यक्रम पर विशेष ध्यान दिया जाए ।

शिक्षा आयोग (1964-66) उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम को व्यापक और अध्यतन बनाया जाए उच्च शिक्षा 2 के स्थान पर 3 बर्ष की कर दी जाए । पाठ्यक्रम के संबंध मे कहा स्नातक स्तर का पठ्यक्रम तीन वर्ष का किया जाए और स्नातक स्तर पर सामान्य और ओनर्स दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए। स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम मे नए बदलाब हो और सब को सामन अवसर दिए जाने चाहिए ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (भाग 5) मे स्पष्ट रूप से उच्च शिक्षा के विषय मे कहा है कि उच्च शिक्षा द्वारा छात्रों मे विशेष ज्ञान एवं कुशलता का विकास किया जाएगा और इसमें मौजूद पाठ्यक्रम मे भी बदलावकी जाएंगें और शिक्षण को चिंता से दूर बनाया जाएगा उच्च शिक्षा का स्तर बनाए रखने के लिय उत्तरदायित्व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का होगा ।

वर्तमान परिपेक्ष्य –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 –

उच्चतर शिक्षा - उच्चतर शिक्षा मनुष्य और साथ ही सामाजिक कल्याण के विकास में आवश्यक भूमिका निभाती है। जैसा कि हमारी संविधान में भारत को एक लोकतांत्रिक न्यायपूर्ण सामाजिक रूप से सचेत संस्कारित और मानवीय राष्ट्र जहां सभी के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का भाव है एक ऐसे राष्ट्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है एक राष्ट्र के आर्थिक विकास और आजीविका को स्थायित्व देने के लिए उचित शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान देती है जैसे-जैसे भारत ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था और समाज की ओर बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे और अधिक भारतीय युवा उच्चतर शिक्षा की ओर बढ़ेंगे। 21वीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षा का जरूरी उद्देश्य चिंतनशील बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए। शिक्षा एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है और साथ ही चरित्र और नैतिक और संवैधानिक मूल्य, जिज्ञासा, वैज्ञानिकता, व्यवसायिक विषयों सहित विभिन्न विषयों में द्वारा व्यक्तिगत उपलब्धि और ज्ञान उत्पादन करती है। छात्रों को अधिक सार्थक जीवन और कार्यों के लिए तैयार करना चाहिए और अधिक स्वतंत्रता को सक्षम करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्चतर शिक्षा में बदलाव और नए संचार के लिए उपयुक्त चुनौतियों को दूर करने के लिए रहती है जिससे सभी युवा लोगों को उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण समान अवसर देने वाली एवं समावेशी उच्चतर शिक्षा मिले इस नीति की दृष्टि से वर्तमान उच्चतर शिक्षा प्रणाली में प्रमुख परिवर्तन शामिल है। शिक्षा नीति यह कहती है कि ऐसी उच्चतर शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ना हैं जिसमें विशाल बहुविषयक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हों जहां भारतीय भाषाओं में शिक्षा या कार्यक्रमों का माध्यम प्रदान किया जाता है। विद्यार्थियों के अनुभव में वृद्धि के लिए पाठ्यचर्या शिक्षण शास्त्र मूल्यांकन और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सहयोग में परिवर्तन करना। शिक्षण अनुसंधान और सेवा के आधार पर योग्यता, नियुक्तियों और कैरियर की प्रगति के माध्यम से संकाय और संस्थागत नेतृत्व की स्थिति की अखंडता की पुष्टि करना। उच्चतर शिक्षा में छात्रों को सीखने के लिए विद्वानों और साथियों के जीवंत समुदायों का निर्माण, विषयों के बीच की भेदभाव प्रणाली को खत्म करना तथा विकास करने में सक्षम क्षत्रिय अनुसंधान समुदाय अनुशासन आदि कार्य में बढ़ोतरी करना। भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य और अभिनव व्यक्तियों को बनाने के लिए इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अजीत शिक्षक अनुभव प्रदान करना।

इस प्रकार शिक्षा जगत मे अनेक आयोगों द्वारा शिक्षा में सुधार के लिया कार्य किए गए है । शिक्षा हमारी जीवन की हर आवश्यकता से जुड़ी हुई है व्यक्ति को समाज मे रहने के लिया भी समाज की मान्यताओं तथा जरूरतों को समझना पड़ता है । बालक का जन्म जब होता है, तो वह एक खाली वर्तन के सामन होता है धीरे-धीरे शिक्षा द्वारा इस वर्तन को भरा जाता है । वह वर्तन शिक्षा तथा बालक की बुद्धि पर निर्भर करता है । शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया बालक की बुद्धि का स्थान बहुत अहम होता है बालक की बुद्धि अगर कुशाग्र होती है तो वह बहुत ही जल्दी सीख लेता है ।

1.1.0 बुद्धि से अभिप्राय –

सर्वप्रथम 1885 में इंग्लैंड के फ्रांसिस गाल्टन ने बुद्धि शब्द दिया । इनसे पहले मनोवैज्ञानिक इसके के संबंध में एकमत नहीं थे। उनके विचारों में भिन्नता पाई जाती थी । 1890 में लन्दन के पेंसिलवेनिया के प्रोफेसर केटल ने अपनी पुस्तक “मानसिक परीक्षण एवं मापन” में मानसिक परीक्षण शब्द का उपयोग किया । 1904 में फ्रांस में अल्फ्रेड बिने की अध्यक्षता में बिने आयोग का गठन किया गया । अल्फ्रेड बिने ने सर्वप्रथम मानसिक आयु शब्द का प्रयोग किया । अलफ्रेड बिने को बुद्धि का पुरोगामी कहा जाता है। 1905 में साइमन के जुड़ने पर इसे “बिने साइमन आयोग” कहा जाने लगा । बिने साइमन आयोग के द्वारा पहली बुद्धि मापनी बनाई गयी जिसे “बिने साइमन बुद्धि मापनी ” कहा जाता है। 1911 में बिने साइमन बुद्धि मापनी में परिवतर्न हुआ 1911 में ही बिने के द्वारा सामाजिक आयु शब्द का प्रयोग किया गया । स्टर्न के अनुसार बुद्धि एक व्यक्ति की सामान्य क्षमता है जिसके द्वारा वह चेतनपूर्वक अपने विचारों को नवीन आवश्यकताओं से समायोजित करता है । यह नई समस्याओं तथा जीवन की परिस्तिथियों के प्रति सामान्य मानसिक ग्रहनशीलता है ।

वैशलर (1939) के अनुसार ‘‘बुद्धि एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है ,विवेकशील चिंतन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण तरीके से समायोजन करता है”

एचडी गैरेट के अनुसार ऐस समस्याओं को हल करने की योग्यता जिसमें ज्ञान और प्रतीकों को समझने तथा प्रयोग करने की आवश्यकता है जैसे शब्द अंक रेखाचित्र समीकरण और सूत्र ही बुद्धि है ।उक्त तथ्य से यह कहा जा सकता है कि बुद्धि तथा को लेकर भिन्नता दिखाई देती हैं फिर भी उन्हें आधार मानकर यह कहा जा सकता है कि बुद्धि सामान्य मानसिक समन्वय है । जिसकी सहायता से व्यक्ति को उसके प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने का अवसर मिलता है

यह नवीनतम परिस्थितियों में व्यक्ति का समायोजन बनाए रखने में विशेष रूप से योगदान देती है इसका संबंध मानवीय अनुभवों के विश्लेषण एवं आवश्यकताओं के नियोजन उनका पुनर्गठन करने में भी सहायक होता है ।

1.1.1 संवेगात्मक बुद्धि से आशय - "संवेगात्मक बुद्धि एक नई स्तिथि मे स्वयं को समायोजित करने की क्षमता है। 1920 मे सर्वप्रथम थॉर्नडाइक ने एक शब्द का उपयोग किया । संवेगात्मक बुद्धि स्वयं की अथवा दूसरों की भावनाओं तथा संदेशों को समझने व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है दूसरे शब्दों में अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने की क्षमता अलग भावनाओं के बीच भेद करना तथा उसे समझना सोचना विचार करना तथा मार्गदर्शन करने की क्षमता ही बुद्धि कहलाती है । वर्तमान के शोध सुदूर भविष्य की सफलताओं तथा भविष्य की महत्वकांक्षाओं का दर्पण होते हैं 1993 मे गार्डनर ने वर्गीकरण किया ओर बताया कि संवेगात्मक बुद्धि 5 आयामों से मिलकर बनी है 1. आत्मज्ञान, 2. भावनात्मक नियंत्रण 3. स्व प्रेरणा 4. सहानुभूति 5. संबंधों की समझ ।

1.1.2 गोलमैन 1995 के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि "व्यक्ति के स्वयं के एवं दूसरों के संवेगों को पहचानने की वह क्षमता है जो हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को स्वयं में और अपने संबंधों के दौरान भली प्रकार से साधने में सहायक होती है।"

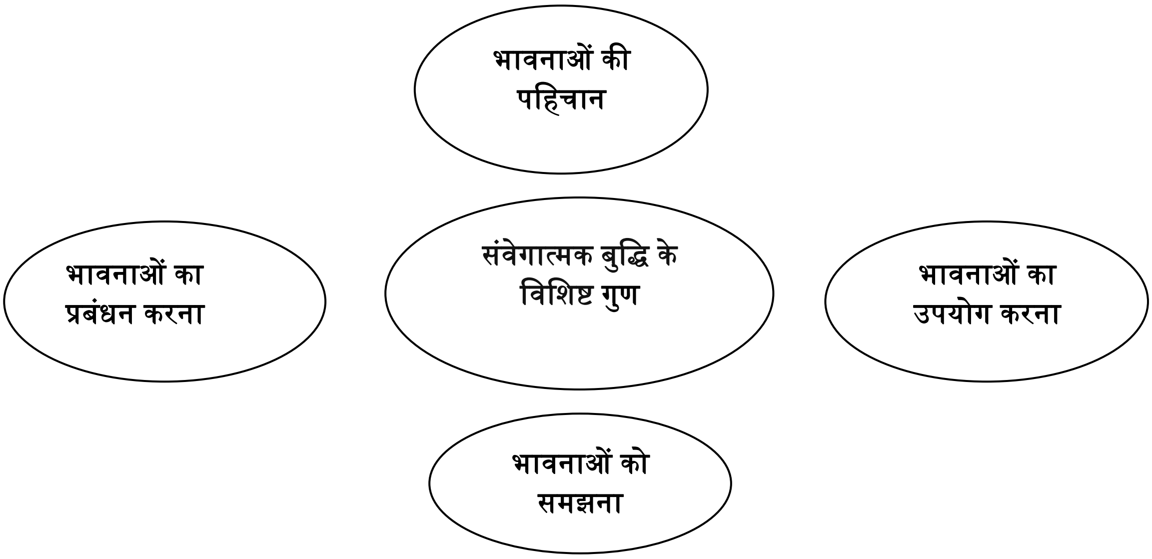

चित्र सं : 1 संवेगात्मक बुद्धि के विशिष्ट गुण

संवेगात्मक बुद्धि की अनेक विशेषताएँ -

1. सार्वभौमिक योग्यता है।

2. व्यक्ति की एक जन्मजात योग्यता है।

3. व्यक्ति के प्रत्येक क्रियाकलापों को प्रभावित करती है।

4. संवेगात्मक बुद्धि में व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है।

5. संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध न केवल अपने संवेगों को समझने से है वरन् दूसरे के संवेगों को उचित रूप में समझने से भी है।

6. एक अमूर्त प्रत्यय है जो मनौवैज्ञानिक निर्मित है।

7. व्यक्ति में निहित गुणों व योग्यताओं के साथ ही संवेगात्मक बुद्धि भी उसकी उपलब्धियों के अर्जन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

8. व्यक्ति में निहित गुणों व योग्यताओं के साथ ही संवेगात्मक बुद्धि भी उसकी उपलब्धियों के अर्जन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

1.1.1 प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) से आशय - मानव जीवन मे अनेक समस्याएं आती है जिनका सामना उसे ही करना पड़ता है उन समस्याओं से किस प्रकार वह अपने आप को सभाल पाता है या निकाल पाता है यह उसकी क्षमता प्रतिकूलता बुद्धि कहलाती है ।

(कोर्ल हेडरिक्स 2016) "प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) एक व्यक्ति की भावनात्मक क्षमता तथा जीवन मे विरोधियों से निपटने की उसकी क्षमता को संदर्भित करती है । मूल रूप से यह मानव मे लचीलापान है"

स्टोल्ट्ज़, (2021) "एक **प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence)** वह है जो किसी व्यक्ति की अपने जीवन में प्रतिकूलताओं से निपटने की क्षमता का मापन करती है। **प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence)** वाला व्यक्ति बाधाओं का प्रभावी ढंग से सामना करने और अवसरों का लाभ उठाने मे सक्षम होगा"

प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) एक व्यक्ति के जीवन मे परिस्थितियों समस्याओं तथा बाधाओं का सामना करने की एक क्षमता है जोकि व्यक्ति को उनसे लड़ने या उनका सामना करने मे सहायता प्रदान करती है इस बुद्धि वाला व्यक्ति परिस्थितियों का समाना करने व उनका लाभ उठाने मे सक्षम होता है ।

प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) की विशेषताएं **–**

- **प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence)** विपरीत परिस्थिति से सामना करने की क्षमता है ।
- यह व्यक्ति की भावनात्मक क्षमता है ।
- यह व्यक्ति को साहस प्रदान करती है ताकि वह संसायाओं का सामना कर सके ।
- जीवन की विपरीत परिस्थिति की समझ विकसित करती है ।
- प्रतिकूलता बुद्धि एक व्यक्ति की भावनात्मक क्षमता और जीवन के विरोधियों से निपटने की उनकी क्षमता को संदर्भित करती है।

1.1.8 आध्यात्मिक बुद्धि से आशय - यह बुद्धि का एक उच्च आयाम है जो प्रामाणिक आत्मा के गुणों और क्षमताओं को ज्ञान, करुणा, अखंडता, आनंद, प्रेम, रचनात्मकता और शांति के रूप में सक्रिय करता है ।

स्टीफन कोंवे- 'आध्यात्मिक बुद्धि सभी प्रकार की बुद्धियों का केंद्र है, क्योंकि यह दूसरों के लिए मार्गदर्शन का स्रोत बन जाती है'।

अध्यात्म शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हैं। ये भौतिक शरीर से नहीं अपितु मानव की आत्मा से संबंधित है । 1997 में देवेश ने अपनी पुस्तक **द साइकोलोजी ऑफ अध्यात्म** में यह माना है वास्तव मे मानव की वास्तविकता अध्यात्म ही है और अध्यात्म द्वारा ही व्यक्ति मे विश्वास अच्छाई और धार्मिकता का जन्म होता है ।

(ज़ोहर और मार्शल, 2001) के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि अंतिम बुद्धि है जिसके साथ हम अर्थ और मूल्य की समस्याओं को संबोधित करते हैं और हल करते हैं, जोहर ने बताया कि एक व्यक्ति की आध्यात्मिक बुद्धि उच्च स्तरीय हो सकती है लेकिन इसका तात्पर्य यह बिल्कुल भी नहीं है कि वह धार्मिक आस्था रखता हो । इसी प्रकार कोई व्यक्ति धार्मिक है किन्तु इसका आशय यह बिल्कुल भी नहीं है, कि वह आध्यात्मिक बुद्धि उच्च स्तरीय रखता हो ।

आध्यात्मिक बुद्धि की विशेषताएं –

1. आध्यात्मिक बुद्धि उच्च स्तरीय होती है ।
2. आध्यात्मिक बुद्धि भौतिक जगत के साथ साथ अध्यात्म से जुड़ी हुई होती है ।
3. आध्यात्मिक बुद्धि प्रामाणिक आत्मा के गुणों और क्षमताओं से संबंधित है ।
4. आध्यात्मिक बुद्धि में क्षमताओं का ज्ञान, करुणा, अखंडता, आनंद, प्रेम, रचनात्मकता और शांति आदि

समाहित होते हैं ।

5. आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्तियों मे मूल्यों का विकास करती हैं ।

1.1.9 सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से आशय -

जानसन(1903) के अनुसार "समाजशास्त्र में हमारा संबंध उन मूल्यों से है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक संबंधों से संबध्द हो, विशेषरूप से ऐसे नैतिक व धार्मिक मूल्यों से जिन्होंने किसी अंश तक संस्थात्मक स्वरूप धारण किया हो।"

सामाजिक मूल्य वे मानक है जिनके द्वारा हम किसी वस्तु, व्यवहार, लक्ष्य, साधन, गुण आदि को अच्छा या बुरा, उचित या अनुचित, वांछित या अवांछित ठहराते हैं। इन्हें हम उच्च स्तरीय मानदंड कह सकते हैं। सामाजिक मूल्य वे आदर्श है जो सामाजिक जीवन में आचरण में अभिव्यक्त होते हैं।

सामाजिक मूल्यों की विशेषताएं ;

1. सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य सामूहिक होते हैं।
2. सामाजिक मूल्य सामाजिक मानक है।
3. सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य समाज द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।
4. सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य भावनाओं से जुड़े होते हैं।
5. सामाजिक मूल्य गतिशील होते हैं।
6. सामाजिक मूल्य भिन्नताएं लिए होते हैं।
7. सामाजिक मूल्य सामाजिक कल्याण व आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

सांस्कृतिक मूल्यों से आशय -

भारत भूमि संस्कारों की भूमि है यह संस्कार ओर सभ्यता घर घर मे विराजमान है भारतीय सांस्कृति हमारी धरोहर है जिसके कारण ही हमारा देश सम्पूर्ण विश्व मे जाना जाता है ।अपने आंतरिक मूल्य के अलावा, संस्कृति महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक लाभ प्रदान करती है । बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य, बढ़ी हुई सहनशीलता और दूसरों के साथ आने के अवसरों के साथ, संस्कृति हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है और व्यक्तियों और समुदायों दोनों के लिए

समग्र कल्याण को बढ़ाती है।सांस्कृतिक मूल्यों का अधिकार संविधान द्वारा प्रदत्त है। संस्कृति ही व्यक्ति विशेष को पहचान दिलाती है। मानव को मानव बनाने का श्रेय उन सांस्कृतिक मूल्यों को जाता है, जिनके माध्यम से वह अपना जीवन व्यतीत करता है। ये मूल्य ही उसे उच्च से उच्चतर विकास की ओर ले जाते हैं । सांस्कृतिक मूल्य को पांच घटकों में समझा जा सकता है । **सौंदर्य, सामाजिक, प्रतीकात्मक, आध्यात्मिक और शैक्षिक मूल्य** ।

सामाजिक सांस्कृतिक **मूल्यों की विशेषताएं ;**

1. सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य सामूहिक होते हैं।
2. सामाजिक मूल्य सामाजिक मानक है।
3. सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य समाज द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।
4. सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य भावनाओं से जुड़े होते हैं।
5. सामाजिक मूल्य गतिशील होते हैं।
6. सामाजिक मूल्य भिन्नताएं लिए होते हैं।
7. सामाजिक मूल्य सामाजिक कल्याण व आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
8. सांस्कृतिक मूल्य समयसमय पर- हमारा मार्गदर्शन' पर करते हैं ।

1.1.10 कोर पाठ्यचर्या की अवधारणा -

कोर पाठ्यक्रम वह है जिसमें बालक या छात्रों को कुछ विषयों को अनिवार्य रूप से पढ़ना होता है तथा कुछ विषयों को वह अपने आनंद या रुचि के आधार पर चयनित करता है ।

कोर पाठ्यक्रम के अनिवार्य विषय –

- स्वास्थ्य शिक्षा
- शारीरिक परीक्षण
- गणित
- विज्ञान
- सामाजिक विज्ञान आदि ।

कोर पाठ्यक्रम की विशेषताएं एवं महत्व- (राष्ट्रीय शिक्षा नीति)

1. यह पाठ्यक्रम बाल केंद्रित एवं मनोवैज्ञानिक होता है।
2. यह पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या की समस्या को पूर्ण करता है ।
3. यह पाठ्यक्रम सभी छात्रों की समान आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास करता है ।
4. इस पाठ्यक्रम में कई विषयों को एक साथ जोड़ कर पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है यह पाठ्यक्रम समय विभाग चक्र लचीला होता है इसमें शिक्षिका समस्या को पूर्ण करता है जबकि निश्चित समय नहीं होता है।
5. इसकी सहायता से बालकों की रचनात्मक एवं उत्पादन शक्ति को प्रेरित किया जाता है ।
6. कोर पाठ्यक्रम में बालक अपने चारों ओर की बातों से प्रभावित होते हैं यह बाल केंद्रित होते हुए भी जीवन अनुभव प्रदान करता है।
7. बालको को अपने दैनिक जीवन को कार्य कला एवं चारों ओर के वातावरण से संबंध स्थापित करने में सहायता मिलती है तथा समायोजित होने में भी कुशाग्र बनते हैं ।
8. पाठ्यक्रम अत्यंत व्यावहारिक एवं जीवन उपयोगी होता है यह पाठ्यक्रम बालक की जिंदगी के हर क्षेत्र में उसे लाभ प्रदान करने के साथ–साथ भावी अनुभव प्रदान करता है।

1.2.0 समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य

वर्तमान समय मे अगर देखा जाए तो मानव जीवन दिन दूनी रात चोगुनी तरक्की कर रहा है । समय के साथ हर क्षेत्र मे अत्यधिक बदलाव हो रहे हैं। शिक्षा का क्षेत्र भी इस तरक्की से अछूता नहीं है। शिक्षा में रोज नित नए परिवर्तन हो रहे हैं पुराने समय मे जब शिक्षा मे गुरुकुल प्रक्रिया थी तब से लेकर आज तक विद्यार्थियों को सुबिधा प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम मे अनेक बदलाब किए गए हैं अनेक पहलुओं को शिक्षा से जोड़ा गया है। शिक्षा को रुचिकर बनाने के लिए अनेक आयोगों ने इसमें अपनी सहयोगिता भी उच्च शिक्षा दी है। विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) विशेष योगदान है । आयोग ने स्नातक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम मे विशेष ध्यान देते हुए कहा "स्नातक स्तर पर सभी वर्गों कला,विज्ञान,और व्यवसायिक में सामान्य शिक्षा और धार्मिक शिक्षा अनिवार्य की जाए । स्नातक स्तर पर सभी वर्गों कला, विज्ञान, व्यवसायिक पाठ्यक्रम विस्तृत किए गएं उनमें छात्रों को अपनी रुचि व आवश्यकता अनुसार विषय का चयन करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है । **राष्ट्रीय शिक्षा आयोग**(1964-66) ने पाठ्यक्रम के संबंध मे कहा "स्नातक स्तर का पठ्यक्रम तीन वर्ष का किया जाए और स्नातक स्तर पर सामान्य और ओनर्स दोनों प्रकार के

पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए। स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम मे नए बदलाब हो और सब को सामन अवसर दिए जाए। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986** में अंगीकृत है कि हमारा भारतीय समाज अनेक संप्रदायों, जातियों, संस्कृतियों, सभ्यताओं, प्रथाओं मान्यताओं तथा विविधता में बटा हुआ है अतः हमें एक ऐसी पाठ्यचर्या का चयन करना होगा जो स्थानीय भाषाओं को ध्यान में रखकर बनाई गई हो कुछ विषय अनिवार्य तथा कुछ विषय ऐसे होने चाहिए जो कि स्थानीय भाषाओं पर आधारित हो। जिससे हम ऐसे व्यक्ति या छात्र का निर्माण कर सकें जो की भाषा तथा अनेक प्रकार से अपने समुदाय एवं अपनी भाषा का विकास कर सके। हम अपनी समाज में कर्तव्यनिष्ठ तथा चरित्रवान व्यक्तियों का निर्माण करें और सामाजिक समस्याओं का अंत करें। कोर पाठ्यक्रम बालक की सामान्य विकास पर ही केंद्रित है। भारत ही नहीं जैसे-जैसे 20 सदी का आगमन हुआ है वैसे-वैसे अनेक देशों मे भी कोर पाठयक्रम पर बहुत ही ध्यान दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कोर पाठ्यक्रम पर विशेष ध्यान दिया गया है और कोर पाठ्यक्रम को दो भागों मे विभाजित किया है । मुख्य रूप से मूल्य आधारित अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम की बात की गई है जहा पर शिक्षा के साथ सम्पूर्ण विकास को ध्यान मे रखते हुए सम्पूर्ण मानव निर्माण पर बल दिया है । वर्तमान समय की मांग है कि कोर पाठ्यक्रम को पाठ्यक्रम का अहम हिस्सा बनाया जाए क्योंकि परिवर्तन के इस समय हम अपनी आवश्यक संस्कृतिक और विरासत को भूल कर अलग ही दिशा में जा रहे हैं जो कि अतियन्त घातक है। इसीलिए भारतीय समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कुछ विषयों को ध्यान में रखना जरूरी है। जैसे लोकतंत्र-, भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास,स्थानीय भाषाओं का ज्ञान पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता, धर्म निरपेक्षता आदि। उच्च शिक्षा में कोर पाठ्यक्रम अनेक हम भारत की बात करें तो भारतीय परिपेक्ष में इस पाठ्यक्रम द्वारा भारतीय संस्कृति तथा अन्य कई विषयों का चयन किया गया है जिसकी सहायता से ही भारतीय समस्या तथा विशेषताएं आदि का अध्ययन विद्यार्थी कर सकेंगे।

दयालबाग़ शिक्षा नीति- 1975 दयालबाग शिक्षण संस्थान डींड विश्वविद्यालय दयालबाग आगरा (उत्तर प्रदेश) इसका एक बहुत ही सशक्त उदाहरण है। जिसमें कोर पाठयक्रम की व्यवस्था है जिसकी सहायता से स्नातक स्तर के सभी बालकों को चाहे वह किसी भी वर्ग के हो उनकी रूचि की आधार पर शिक्षा के साथ-साथ संस्कृति विरासत दोनों को एक साथ लेकर आगे बढ़ाया जा रहा है ।मूल्यों को आधार मान कर ही कोर पाठ्यक्रम का निर्माण की गया है

और निम्न बिंदुओं पर ध्यान दिया गया है –

1. शारीरिक मानसिक संवेगात्मक तथा नैतिक अखंडता

2. सच्चाई, संयम और साहस की भावना

3. नम्रता, सादा जीवन, निस्वार्थ सेवा और त्याग

4. वैज्ञानिक स्वभाव, व्यावहारिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण

5. अपने हाथों से काम करने की इच्छा और क्षमता

6. सभी आस्थाओं और आस्थाओं का सम्मान

7. मनुष्य में भाईचारे की भावना का निर्माण

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान डींड विश्वविद्यालय मे प्रत्येक स्नातक स्तर पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम को पढ़ना होता है वह चाहे किसी भी वर्ग का हो । दयालबाग़ शिक्षण संस्थान मे कोर पाठ्यक्रम विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया है। **दयालबाग़ शिक्षा नीति में** मुख्य पाठ्यक्रम छात्रों के समग्र विकास और उनमें मानवीय मूल्यों को विकसित करने के उद्देश्य से दयालबाग़ शिक्षा मे शामिल किए गए हैं । उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बी.ए, बी.एस.सी ,बी. कॉम के प्रत्येक सेमेस्टरों में निम्नलिखित अनिवार्य पाठ्यक्रम को पढ़ाया जाता हैं ।

प्रथम समसत्र में पढ़ाये जाने वाले अनिवार्य पाठ्यक्रम –

1) CEC 151 - Cultural Education Course (संस्कृतिक शिक्षा पाठ्यक्रम)

2) ESC151 – Environmental Studies Course (पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम)

3) GKC151 – General Knowledge Course (सामान्यज्ञान पाठ्यक्रम)

4) RDC291 – Rural Development Course (ग्रामीण विकास पाठ्यक्रम)

द्वितीय समसत्र -

1) CAC 251 – Co-curricular Activities (पाठ्यसहगामी क्रिया)

2) CRC 251- Comparative CRC Study of Religions (धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन)

3) GKC 251 – Science, Math, GK and Current Affairs (विज्ञान ,गणित ,और सामयिकी

4) RDC 251 – Agriculture Operations (कृषि कार्य)

5) RDC252 - Social Service (सामाजिक सेवा)

तृतीय समसत्र –

1 GKC 351 – Science, Math, GK and Current Affairs (विज्ञान ,गणित ,और सामयिकी)

चतुर्थ समसत्र –

CAC 451 – Co-curricular Activities (पाठ्यसहगामी क्रिया)

GKC 451 – Science, Math, GK and Current Affairs (विज्ञान ,गणित ,और सामयिकी)

इस प्रकार दयालबाग शिक्षण संस्थान मे अनेक प्रकार से छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु तथा बालकों के भविष्य के निर्माण के लिए पाठ्यक्रम में किताबी ज्ञान के साथ साथ जीवनयापन के लिए आवश्यक वास्तविक ज्ञान को भी जोड़ा गया हैं यही वास्तव मे एक मानव को वास्तविक मानव बनाता है। दयालबाग़ की शिक्षा नीति मे जिसमे मुख्य रूप से इन्ही बातों पर जोर दिया गया है । जो दयालबाग शिक्षानीति मे ही शिक्षा नीति में दे दिया था वही बातें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 मे भी सामने आई । दयालबाग़ शिक्षा नीति एक पूर्ण मानव को विकसित करती है तथा इस बात पर विशेष जोर देती है कि शिक्षा ग्रहण करने के बाद एक इसे व्यक्ति का निर्माण हो जो पूर्ण गुणवान व्यक्ति हो जिसकी पहिचान बौद्धिक शक्ति ,वैज्ञानिक स्वभाव ,भावनात्मक परिपक्वता, सच्चाई, उच्च नैतिक गुण, कर्तव्य परायणता और दायित्व का निर्वहन करने वाले व्यक्ति के रूप मे हो । इन सभी कोर पाठ्यक्रमों द्वारा बालकों मे प्रभाव देखने के लिए शोधकत्री द्वारा शोध कार्य किया जाएगा । वर्तमान समय मे समूची शिक्षा मे अनेकों परिवर्तन हुए हैं जिन्होंने शिक्षा की परिभाषा ही बदल दी है शिक्षा मे जिस प्रकार से नित नए शोध कार्य हो रहे हैं तथा अनेक उपयोगों द्वारा शिक्षण प्रणाली को रुचिकर बनाया जा रहा है । पाठ्यक्रम मे कोर पाठ्यक्रम को भी जोड़ा गया है ताकि बालकों मे शिक्षा के प्रति ओर अधिक रुचियों का जन्म हो । उनकी मानसिक शारीरिक तथा संवेगिक, नैतिक मूल्यों को सभाल कर रखने के लिया शिक्षा मे अनेक बदलाब हुए हैं तथा समय के साथ और भी होते रहेंगे। वर्तमान शिक्षा नीति 2020 भी इन्ही पहलुओं पर विशेष ध्यान दे रही है ताकि शिक्षा के साथ साथ बालकों का भविष्य निर्माण किया जा सके और बालकों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्य का निर्माण किया जा सके ।

अमेरिकी कॉलेजों के पाठ्यक्रम में देखा गया है कि स्नातक स्तर पर कोर पाठ्यक्रम पर बहुत ही ध्यान दिया गया है

संयुक्त राज्य अमेरिका का सेंट जॉन्स कॉलेज भी इसका एक उदाहरण हैं। कोर पाठ्यक्रम के संदर्भ मे बरे 2007 तथा गुड चाइल्ड ने 1991 मे कहा है कि मुख्य पाठ्यक्रम एक अकादमिक अनुसाशन के रूप में स्थिति को मजबूत करने के लिए आवश्यक ज्ञान तथा मूल्य प्रदान करता है । हम यह कह सकते हैं कि कोर कोर्स का अर्थ एक ऐसा कोर्स है जिसे किसी विशेष कार्यक्रम में प्रवेश लेने वाले छात्र को डिग्री प्राप्त करने के लिए सफलतापूर्वक पूरा करना होगा और जिसे किसी अन्य पाठ्यक्रम द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है।

कोर पाठ्यक्रम के संदर्भ मे अनेक शोध कार्य किए गए हैं । टूम एंड कलियोनिमी 2012 हेलसिंकी विश्वविद्यालय फ़िनलंड में एरजा विटिका, ने कोर करिकुलम चर से संदर्भ मे शोध किया और निष्कर्ष मे पाया गया कि शैक्षिक परिवर्तन को सक्षम और प्रबंधित करने के लिए एक साधन के रूप में कोर पाठ्यक्रम है । संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ मे हुए शोध कार्य रेनू 2021 प्रयागराज के अध्ययन किया निष्कर्ष के रूप मे प्राप्त हुआ के बी.एड़ स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा स्तर पर संवेगात्मक बुद्धि का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।। यूनिवर्सिटी लर्निंग एंड टीचिंग अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (InCULT 2012) मैज़ातुल मोहज़ाना ने शोध किया और निष्कर्ष मे पाया भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मूल्य और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ उनके संबंधों पर विशेष रूप से पूर्व-सेवा शिक्षकों के बीच महत्वपूर्ण संबंध हैं। इसी प्रकार **प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence)** के संदर्भ मे हुरी सुहेंद्री ए. 2018 ने शोध किया और निष्कर्ष मे पाया कि गणित में समस्या समाधान क्षमता पर प्रतिकूलता बुद्धि और रचनात्मकता का प्रभाव है। सिंह. एस । शर्मा ,टी (2017) ने व्यावसायिक तनाव पर प्रतिकूलता बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया ओर परिणाम सार्थक प्राप्त हुए।

Meena.K 2020 के अनुसार मूल्य किसी संस्कृति के सारभूत तत्व है जो उसकी अभौतिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करते है। मूल्य समाज मे लोगों को यह बताते है कि उनके लिये क्या उचित और महत्वपूर्ण है।प्रत्येक समाज मे मानव व्यवहार के संचालन, नियंत्रण एवं निर्देशन के लिए कुछ आदर्श एवं लक्ष्य होते है, जिनके प्रति समाज के सभी सदस्य श्रध्दा रखते है और उसके अनुकूल अपना व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करते है। ये आदर्श या लक्ष्य एक प्रकार के सामाजिक मानदंड होते है जो समाज के सदस्यों को उचित अनुचित-योग्य अयोग्य-, पापपुण्य आदि की - व्याख्या करने मे सहायक होते है। ये सामाजिक मानदंडसामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों व क्रियाओं जैसे परिवार,

विवाह, जाति वर्ग, धर्म, राजनीति आर्थिक जीवन आदि से सम्बंधित होते है। ये मापदंड मनुष्य के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों से संबंधित कार्यकलापों को वांछिच दिशा की ओर निर्देशित करते रहते है। इन्हीं सामाजिक मानदंडों को सामाजिक मूल्य कहते हैं।

प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) के संदर्भ मे शोध कार्य 'गणित सीखने में लचीलापन प्रतिकूलता बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता की भूमिका' हुरी सुहेंद्री ए. 2018 किया और निष्कर्ष मे पाया कि गणित में समस्या समाधान क्षमता पर प्रतिकूलता बुद्धि और रचनात्मकता का प्रभाव पड़ता है। नूरजाना, इंडोनेशिया 2018 आध्यात्मिक बुद्धि प्रतिकूलता, और भावनात्मक के बीच लचीलापन निष्कर्ष मे विशेष संबंध पाया । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे भी इसी बात को विशेष रुप से बताया गया है कि किस तरह मूल्यों के निर्माण के किया कोर पाठ्यक्रम की सहायता से बालकों मे ज्ञान कला निर्माण किया जा सकता है । इस प्रकार अनेक शोध कार्यों का अध्ययन करने के पश्यात शोधकत्री के मस्तिष्क मे निम्न प्रश्नों के उत्तरों को जानने जिज्ञासा का जन्म होता है इन्ही प्रश्नों के उत्तरों की प्राप्ति के लिए शोध कार्य किया जाएगा ।

1. क्या स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का प्रभाव पड़ता है ?
2. क्या स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों(कला ,विज्ञान तथा बाणिज्य) के विद्यार्थियों की प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का प्रभाव पड़ता है ?
3. क्या स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों(कला वर्ग ,विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग) के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का प्रभाव पड़ता है ?
4. क्या स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला वर्ग ,विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग) के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का प्रभाव पड़ता है ?
5. क्या स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला वर्ग ,विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग) विद्यार्थियों की संवेगिक बुद्धि, प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence), आध्यात्मिक बुद्धि तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का प्रभाव पड़ता है ?

1.3.0 समस्या कथन - स्नातक स्तर के कला वर्ग, विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence), आध्यात्मिक बुद्धि, और सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन।

1.4.0 अध्ययन मे प्रयुक्त पदों की व्याख्या –

1.4.1 स्नातक स्तर

सैद्धांतिक परिभाषा - विश्वविद्यालय की पहली डिग्री जिसे ग्रैजुएश्न् भी कहा जाता है।

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत अध्ययन मे स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से अभिप्राय बी. ए, बी.एस.सी तथा बी.कॉम के विद्यार्थियों से है।

1.4.2 सैद्धांतिक परिभाषा

बुद्धि – स्टर्न (1980)के मतानुसार 'नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की योग्यता ही बुद्धि है। बुद्धि वह शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति कठिनाइयों को दूर करके परिस्थिति के अनुसार अपने व्यवहार का संगठन करता है।

1.4.3 संवेगात्मक बुद्धि

सैद्धांतिक परिभाषा –गोलमैन (1995) के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के स्वयं के एवं दूसरों के संवेगों को पहचानने की वह क्षमता है जो हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को स्वयं में और अपने संबंधों के दौरान भली प्रकार से साधने में सहायक होती है।

कार्यात्मक परिभाषा -संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों तथा व्यवहार को नियन्त्रित करके एक कुशल व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत होता है तथा अपनी भावनाओं तथा दूसरों की भावनाओं की पहचान करता है व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता है, संवेगों का उचित प्रकटीकरण करता है तथा दूसरों के संवेगो को समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार करता है

1.4.4 प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence)

सैद्धांतिक परिभाषा – (स्टोल्ट्ज दिसम्बर 2021) एक प्रतिकूलता बुद्धि वह है जो किसी व्यक्ति की अपने जीवन में

प्रतिकूलताओं से निपटने की क्षमता का मापन करती है। प्रतिकूलता बुद्धि वाला व्यक्ति बाधाओं का प्रभावी ढंग से सामना करने और अवसरों का लाभ उठाने मे सक्षम होगा।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रतिकूलता बुद्धि एक व्यक्ति के जीवन मे परिस्थितियों, समस्याओं तथा बाधाओं का सामना करने की एक क्षमता है जोकि व्यक्ति को उनसे लड़ने या उनका सामाना करने मे सहायता प्रदान करती है इस बुद्धि वाला व्यक्ति परिस्थितियों का समाना करने व उनका लाभ उठाने मे सक्षम होता है ।

1.4.5 आध्यात्मिक बुद्धि –

सैद्धांतिक परिभाषा – जोहर एण्ड मरसहोल (1999) आध्यात्मिक बुद्धि वह बुद्धि है जिसके द्वारा बालकों मे अध्यात्म गुणों का समावेशन होता है ।

स्टीफन कोंवे आध्यात्मिक बुद्धि सभी प्रकार की बुद्धि का केंद्रीय और सबसे बुनियादी है, क्योंकि यह दूसरों के लिए मार्गदर्शन का स्रोत बन जाती है।

कार्यात्मक परिभाषा- वह बुद्धि है जिसके द्वारा बालकों मे अध्यात्म गुणों का समावेशन होता है वे ज्ञान करुणा दया सहानुभूति आदि मानवीय गुणों मे भी विश्वास रखते हैं बालक सही व गलत और अध्यात्म मे भी विश्वास रखते हैं ।

1.4.6 सामाजिक मूल्य

सैद्धांतिक परिभाषा – जानसन (1984) समाजशास्त्र में हमारा संबंध उन मूल्यों से है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक संबंधों से संबध्द हो, विशेषरूप से ऐसे नैतिक व धार्मिक मूल्यों से जिन्होंने किसी अंश तक संस्थात्मक स्वरूप धारण किया हो।

कार्यात्मक परिभाषा- वे मूल्य जो बालक को समाज मे रहने तथा जीने के सलीखे सीखते हैं तथा उसे योग्य बनाते है कि वह समाज की सभी व्यवस्थाओं, रीति रिवाज तथा मान्यताओं का पालन करें ।

1.4.7 अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम

सैद्धांतिक परिभाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) वह पाठ्यक्रम जो बाल केंद्रित होता है, तथा बालक की अनुकूलतम परिस्थितिओं को

देखकर तैयार किया जाता है, जिसमें कुछ अनिवार्य विषय तथा कुछ विषय ऐसे होते है जिन्हे छात्र अपनी क्षमता के आधार पर चुन सकते है, ताकि सभी छात्रों को शिक्षा देकर उनका तथा समाज का विकास किया जा सके।

कार्यात्मक परिभाषा - कोर पाठ्यक्रम वह है जिसमें बालक या छात्रों को कुछ विषयों को अनिवार्य रूप से पढ़ना होता है तथा कुछ विषयों को वह अपने आनंद या रुचि के आधार पर चयनित करता है।

1.5.0 शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध की महत्ता को ध्यान मे रखते हुए शोधकत्री द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

1) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य वर्ग) के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।
2) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य वर्ग) के विद्यार्थियों की प्रतिकूलता बुद्धि का अध्ययन।
3) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन।
4) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन ।
5) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन।
6) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों की प्रतिकूलता बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन ।
7) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन ।
8) स्नातक स्तर के विभिन्न वर्गों (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य) के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन ।

1.6.0 शोध परिकल्पनाएं

Ho 1) स्नातक स्तर के विभिन्न (कला,विज्ञान तथा वाणिज्य) वर्गों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है ।

Ho 2) स्नातक स्तर के विभिन्न (कला,विज्ञान तथा वाणिज्य) वर्गों के विद्यार्थियों की प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence) पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho 3) स्नातक स्तर के विभिन्न (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) वर्गों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

4) स्नातक स्तर के विभिन्न (कला ,विज्ञान तथा वाणिज्य)वर्गों के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

1.7.0 अध्ययन मे प्रयुक्त चर –

1.7.2 स्वतंत्र चर - अनिवार्य कोर पाठ्यक्रम

1.7.3 आश्रित चर –

- संवेगात्मक बुद्धि
- प्रतिकूलता बुद्धि (Adversity Intelligence)
- आध्यात्मिक बुद्धि
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य

1.8.0 अध्ययन विधि – प्रस्तुत अध्ययन मे घटनोत्तर अनुसंधान विधि का उपयोंग किया जाएगा।

1.9.0 अध्ययन की जनसंख्या – प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या का संबंध उत्तर प्रदेश के आगरा शहर के दयालबाग़ शिक्षण संस्थान के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से है।

1.10.0 न्यादर्श – प्रस्तुत शोध कार्य मे असंभाविता प्रतिदर्शन के अंतर्गत सोद्देश्य नमूना का उपयोग किया जाएगा

तथा स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष के प्रथम समसत्र तथा द्वितीय वर्ष के चौथे समसत्र के विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। दयालबाग़ शिक्षण संस्थान के 200 कला वर्ग 200 वाणिज्य वर्ग तथा 200 विज्ञान वर्ग के कुल 600 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

1.11.0 प्रतिचयन प्रक्रिया - शोध कार्य की सुगमता को ध्यान में रखते हुए दयालबाग़ शिक्षण संस्थान के सभी विद्यार्थीयों के स्थान पर स्नातक स्तर के विद्यार्थीयों का चयन किया जाएगा तथा स्नातक स्तर पर तीन वर्गों के विद्यार्थीयों कला,वाणिज्य,विज्ञान पर ही शोध कार्य किया जाएगा सर्व प्रथम स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष के प्रथम समसत्र के विद्यार्थीयों का चयन किया जाएगा तथा शोध उपकरण की सहायता से शोध कार्य किया जाएगा तथा एक वर्ष पश्यात द्वितीय वर्ष के समसत्र चार में उन्ही विद्यार्थियों पर पुनःशोध कार्य किया जाएगा। दयालबाग़ शिक्षण संस्थान के कुल 600 स्नातक स्तर विद्यार्थियों पर शोध कार्य किया जाएगा।

तालिका संख्या 1 : दयालबाग शैक्षिक संस्थान के कुल विद्यार्थी

संकाय	**कोर्स**	**कुल विद्यार्थी**	**स्नातक स्तर के विद्यार्थी**
शिक्षा संकाय	बीएचडी.पी ,एड.एम ,एड.एल.डी ,एड.	1000	400
वाणिज्य संकाय	बी,कॉम.बी डी.एच.पी,कॉम.एम,वॉक.	1200	450
कला संकाय	बी डी.एच.पी,ए.एम,ए.	1300	350
विज्ञान संकाय	बी डी.एच.पी,सी.एस.एम,सी.एस.	1500	600
अभियांत्रिकी संकाय	बी,टेक.एम,टेक.बी डी.एच.पी,वॉक.	1800	600
सामाजिक विज्ञान संकाय	बी डी.एच.पी ,ए.बी.एम,ए.बी.	1000	300

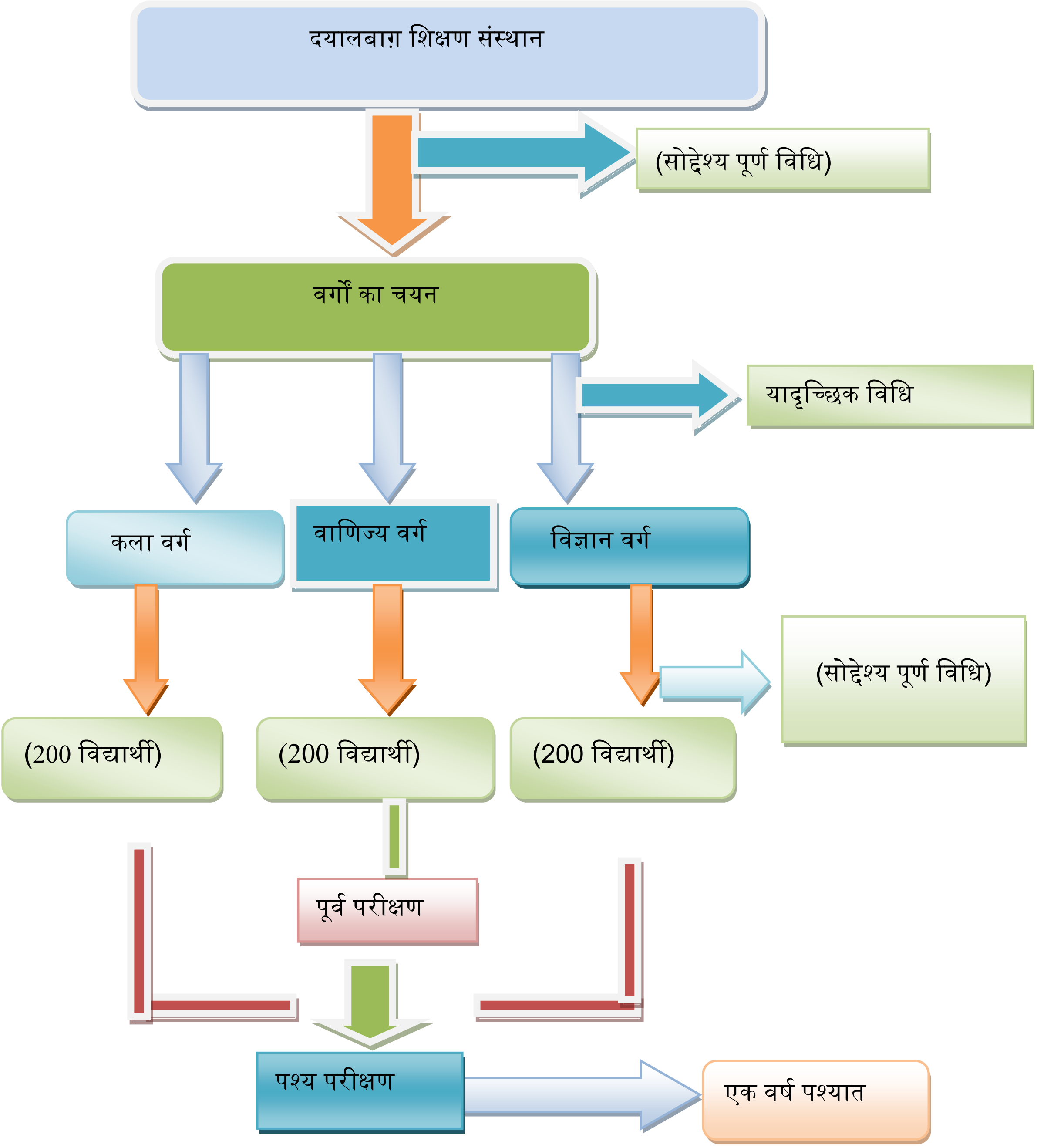

आरेख संख्या 1 प्रतिचयन प्रक्रिया

तालिका संख्या 2 : उपकरण

क्रमांक	**उपकरण**	**निर्माणकर्ता**	**वर्ष**
1	संवेगात्मक बुद्धि	प्रो.रुकईया, अंजुम अहमद	**2021**
2	प्रतिकूलता बुद्धि	**स्वनिर्मित**	
3	आध्यात्मिक बुद्धि	प्रो.रुकईया ,अंजुम अहमद	**2021**
4	सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य	फ़ौजिया नज़म ,अकबर हुसेन	**2021**

1.12.0 आँकड़े का संग्रह हेतु प्रयुक्त उपकरण

शोध कार्य में आंकड़ों के संग्रहण हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा ।

प्रतिकूलता बुद्धि के आयाम – **स्टोल्ट्ज (1997) के अनुसार प्रतिकूलता बुद्धि के मुख्य रूप से चार आयाम हैं**

1 नियंत्रण (Control) 2 स्वामित्व (Ownership) 3 पहुँच (Reach) 4 सहनशीलता (Endurance)

1. **नियंत्रण (Control)-** यह आयाम यह निर्धारित करता है कि परिस्थितियों पर व्यक्ति का कितना नियंत्रण है। प्रतिकूल परिस्थितियों मे वह किस प्रकार स्वयं पर नियंत्रण करता है ।

2. **स्वामित्व (Ownership)-** स्वामित्व आयाम यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति परिस्थितियों को अनुकूल बनाने ले लिए किस हद तक प्रयास करता है ।

3. **पहुँच (Reach) –** पहुँच आयाम यह है कि प्रतिकूलता आपके जीवन के अन्य भागों में कितनी दूर तक पहुँचती है । नियंत्रण में परिणाम और प्रतिकूलता की पहुँच को सीमित करना ।

4. **सहनशीलता (Endurance) –** सहनशीलता आयाम का अर्थ है कि विपत्ति कितनी देर तक रहेगी और व्यक्ति उसे कितने समय तक सामना कर सकता है वह कितना सहनशील है अत्यधिक कठिनाइयों में वह किस कराह का व्यवहार करता है ।

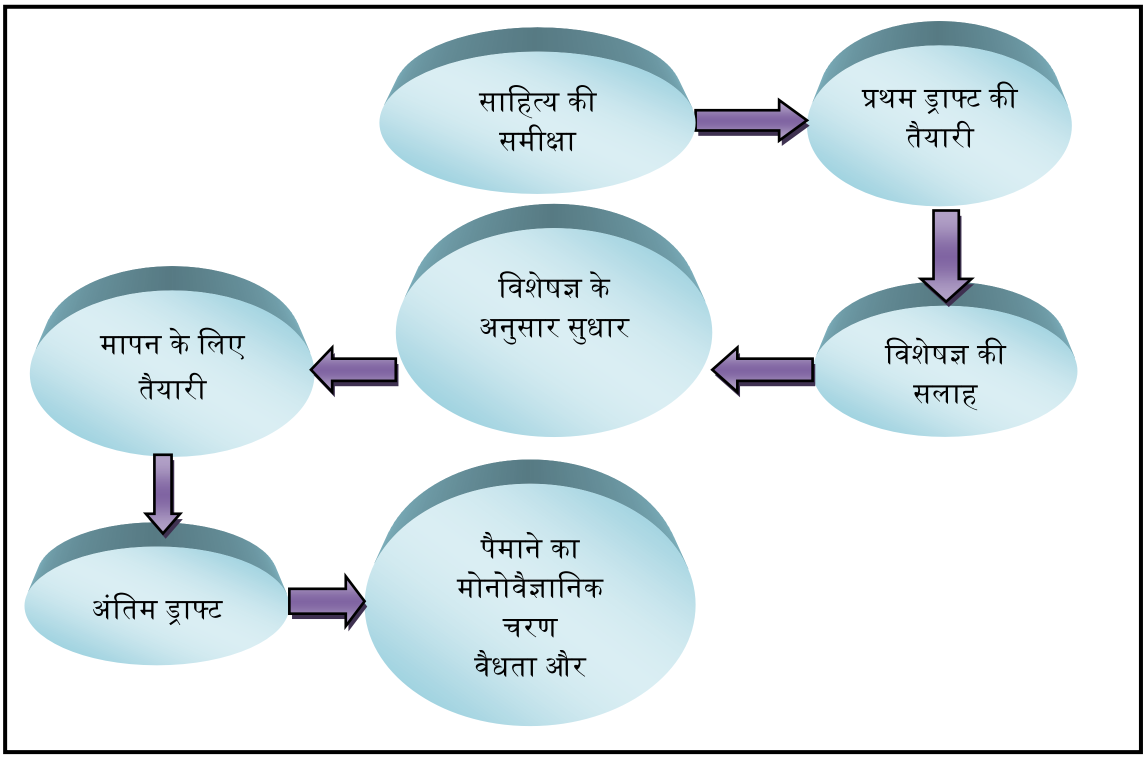

चित्र सं 2 प्रतिकूलता बुद्धि उपकरण निर्माण

1. **1.13.0 अध्ययन मे प्रयुक्त सांख्यिकी** शोध कार्य में आंकड़ों का विश्लेषण करने में सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। शोधार्थी द्वारा निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा

- मध्यमान
- मानक विचलन
- प्रसरण विश्लेषण

1.14.0 परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध दयालबाग़ शिक्षण संस्थान आगरा के विद्यार्थियों तक ही सीमित होगा।
- प्रस्तुत शोध कार्य स्नातक स्तर के छात्रों तक ही सीमित होगा।
- प्रस्तुत शोध बीए विद्यार्थी ,बी.कॉम के विद्यार्थी ,बी.एस.सी वर्ग तक के विद्यार्थी तक ही सीमित रखा जाएगा

1.14.0 अध्ययन की सार्थकता - कोई भी अनुसंधान सही अर्थ मे तभी अनुसंधान होता है जब वह समाज के लिए किसी न किसी रूप मे उपयोगी होता है शोध अध्ययन की सार्थकता शोध कार्य से भविष्य में होने वाले लाभ को दर्शाता है तथा शोध से क्या क्या लाभ और जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं। कोई भी शोध कार्य तब तक सिद्ध नहीं होता है जब तक वह समाज के लिया लाभकारी नहीं होता है। प्रस्तुत शोध कार्य मे कोर पाठ्यक्रम वर्तमान शिक्षा के लिय मील का पत्थर का काम करेगा । जिस प्रकार शिक्षा मे आए दिन परिवर्तन हो रहे है, अगर उन्हे देखा जाए तो एक नई शिक्षा प्रणाली दिखाई देती है जो विद्यार्थि को पूर्ण रूप से स्वतंत्र बनती है कि वह जो चाहे जैसी चाहे शिक्षा ले सकता है । स्नातक स्तर पर छात्रों को उनकी जीवनोपयोगी शिक्षा उन्हे भविष्य के लिय तैयार करती है । विद्यार्थि इस शोध से यह जान सकते हैं कि कोर पाठ्यक्रम की सहायता से उनका अपने व्यवहार मे परिवर्तन को जान पायेगे तथा मूल्यों की समझ विकसित होगी और सामाजिक ज्ञान का विकास होगा । मूल्य आधारित शिक्षा ,सामाजिकता का ज्ञान,दैनिक जीवन जीने की कला ,परिस्तिथियों से लड़ने की क्षमता ,मूल्यवान व्यक्ति का निर्माण आदि सभी मिलकर शोध की सार्थकता को पूर्ण करेंगे ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गुप्ता,प्रो.एस पी (2017)। अनुसंधान संदर्शिका सप्रत्य कार्य विधि,शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज
- राय,पारसनाथ (2016) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीशरण अग्रवाल

- गुप्ता,प्रो.एस पी एवं गुप्ता. अलका (2018) व्यवहार पर विज्ञानों मे संखिकीय विधियाँ
- सिंह,कुमार अरुण (2015) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा मे शोध विधियाँ
- गुप्ता (2016) भारतीय शिक्षा का एतिहास,विकास
- लाल एण्ड शर्मा 2009 भारतीय शिक्षा का एतिहास ,विकास एवं समस्याएं
- स्टोल्ट्ज़, पी।)1998)। प्रतिकूलता भागफलबाधाओं को अवसरों में बदलना : । न्यूयॉर्क
- पॉल जीस्टोल्ट्ज़ ., पीएच.डी. (कल, 2000), आईएसबीए,प्रतिकूलता भागफल
- पॉल जीस्टोल्ट्ज़ ., पीएच.डी. (कोलिन्स, 2001), ASIN काम पर प्रतिकूलता भागफल,न्यूयॉर्क
- आलम, मोहम्मद महमूद। (2012)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-प्रभावकारिता और करियर की परिपक्वता
- हैदराबाद। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, 29(2),
- एंडरसन, डी.आर., स्वीनी.डी.जे; (1986) सांख्यिकी अवधारणाएं और अनुप्रयोग
- पश्चिम प्रकाशन कंपनी, पीपी.5-9
- अन्नाकोडी, आर। (2013)। "उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता"।
- वैश्विक अनुसंधान विश्लेषण, 2(ए), पीपी.34-35।
- एस्टिन, ए.डब्ल्यू; एस्टिन, एच.ए; लिडहोम, जे.ए. (2011) छात्रों के आध्यात्मिक और धार्मिक का आकलन
- गुण। कॉलेज के छात्रों के विकास के जर्नल, 52(1), पीपी.39-61।
- बेलौसा, आई। (2005)। लातविया में शिक्षा के आयाम के रूप में आध्यात्मिकता। निबंध में उद्धृत।
- सार इंटरनेशनल। वॉल्यूम 66, नंबर 4, पी.1311।
- बेस्ट, जे.डब्ल्यू (1996)। रिसर्च इन एजुकेशन अप्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया। लिमिटेड। नई दिल्ली। पी-185।
- ब्रैडशॉ, एफ। (2008)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अकादमिक के बीच संबंधों की खोज

- अफ्रीकी अमेरिकी महिला कॉलेज के छात्रों में उपलब्धि: निबंध सार अंतरराष्ट्रीय वॉल्यूम 69(3) .पी. 871-ए
- ब्रीडलिड, ए; (2009), 'संस्कृति, स्वदेशी ज्ञान प्रणाली और सतत विकास: ए'
- एक अफ्रीकी संदर्भ में शिक्षा का आलोचनात्मक दृष्टिकोण; इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन विकास, 29(2), पीपी.140-149.
- चंद्र एस. और शर्मा, आर. (1997)। डिजाइन अटलांटिक प्रकाशन और वितरक में अनुसंधान नई दिल्ली, पी. 176.
- कॉनर, ब्रिजेट और स्लीयर, स्लारोन (2000)। भावनात्मक खुफिया और चिंता, भावनात्मक
- बुद्धि और लचीलापन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग 16(1).पीपी.249-260.
- क्रिचटन, जे.सी. (2008)। "संगठनात्मक नेता में आध्यात्मिक बुद्धि का गुणात्मक अध्ययन।
- एलायंट इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी "। शोध प्रबंध सार में Santioncisco Bay, U.S.A. Citiea
- सिंह, एस।, और शर्मा, टी। (2017)। भारत में आईटी प्रबंधकों के व्यावसायिक तनाव पर प्रतिकूलता का प्रभाव। प्रोसीडिया कंप्यूटर साइंस, 122, 86-93।
- शर्मा। ए, (2015) भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और आधुनिक और स्वदेशी माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों का मूल्य: एक तुलनात्मक अध्ययन ।
- स्टोल्ट्ज़, पी. (1997)। प्रतिकूलता भागफल
- https://www.kailasheducation.com/2020/06/samajik-mulya-arth-paribhasha.
- https://www.aryaexams.com/2022/04/what-is-core-curriculum.htmlhtm
- https://hi.sainte-anastasie.org/articles/bienestar/inteligencia-espiritual-la-bsqueda-de-un-propsito-mediante-la-calma-interna.html
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A4%95

- https://www.drishtiias.com/hindi/mains-practice-question/question-2845/pnt
- https://educalingo.com
- https://www.kailasheducation.com/2020/06/samajik-mulya-arth-paribhasha.

  https://www.aryaexams.com/2022/04/what-is-core-curriculum.htmlhtm
- l https://hi-in.facebook.com/edumalviyacation/posts/3017443331622661/
- https://knepublishing.com
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pd
- https://dict.hinkhoj.com/adversity-meaning-in-hindi.words
- https://www.collinsdictionary.com/hi/dictionary/english-hindi/emotional
- https://www.researchgate.net/publication/303880166_Scale_for_Spiritual_Intelligence_SI
- https://journal.uii.ac.id/JAAI/article/download/2244/2046/2280
- https://journal.fi/scripta/article/view/67354/27651
- http://trace.tennessee.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=6345&context=utk_gradthes
- https://jimdo-storage.global.ssl.fastly.net/file/afff560e-b5bf-43df-8a7b-061dfd4e08d3/THE_AGE_OF_SPIRITUAL_MACHINES_WHEN_COMPU.pdf
- https://en.wikipedia.org/wiki/Social_intelligence
- https://observatory.tec.mx/edu-news/social-intelligence
- https://hbr.org/2008/09/social-intelligence-and-the-biology-of-leadership
- https://www.scienceofpeople.com/social-intelligence/
- https://saylordotorg.github.io/text_leading-with-cultural-intelligence/s05-03-what-makes-cultural-intelligen.html
- https://www.quora.com/How-does-social-intelligence-differ-across-cultures
- https://www.researchgate.net/publication/230297676_The_bond_between_intelligences_Cultural_emotional_and_social
- https://www.goodreads.com/book/show/1506476.Social_Intelligence_from_Brain_to_Culture
- https://en.wikipedia.org/wiki/Social_intelligence
- https://www.businessballs.com/self-awareness/main-theories-of-emotional-and-social-intelligence-esi/

- https://positivepsychology.com/social-intelligence/
- https://www.samajkaryshiksha.com/2021/06/types-of-sampling.html
- https://hi.wikipedia.org
- https://books.google.co.in
- https://www.atlassian.com/blog/productivity/types-of-intelligence